ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 21 6 से 12 अगस्त, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 श्रा. कृ. 7

यज्ञमय जीवन जीने वाले ईश्वरनिष्ठ परम सन्त, दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष

पूज्यपाद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती नहीं रहे

आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी का एक स्तम्भ और ढह गया

– स्वामी आर्यवेश

यज्ञों के प्रति अर्पित, यज्ञों में अति आस्थावान तथा यज्ञमय जीवन जीने वाले, अपना सम्पूर्ण जीवन मानव मात्र की सेवा में अर्पित करने वाले उदार और ईश्वरनिष्ठ, कर्मठ, तपोनिष्ठ, संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी का 5 अगस्त, 2015 को रात्रि 9.45 बजे निधन हो गया। वे 76 वर्ष के थे। स्वामी सुमेधानन्द जी हिमाचल प्रदेश में रावी नदी के तट पर स्थापित 'दयानन्द मठ चम्बा' के माध्यम से आर्य समाज तथा लोक कल्याण के लिए समर्पित होकर कार्य कर रहे थे। वे प्रकाण्ड विद्वान थे तथा निरन्तर वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों व दर्शन शास्त्रों का स्वाध्याय करते रहते थे। उन्होंने इन ग्रन्थों में यज्ञ की महिमा को पढ़ा, यज्ञ के विषय में जाना तो उन्होंने भी अपने आपको यज्ञों के प्रति समर्पित कर दिया था तथा अपने जीवन को यज्ञमय बना दिया था। यज्ञों को अपने जीवन में उतार लिया था। स्वामी जी ने दयानन्द मठ चम्बा में गुरुकुल, विशाल चिकित्सालय वैदिक अनुसंधान केन्द्र तथा अन्य अनेकों गतिविधियों को संचालित कर रखा था। वयोवृद्ध होते हुए भी वे देश के विभिन्न भागों में जाकर आर्य समाज की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के विशेष प्रयास करते रहते थे। देश की वर्तमान परिस्थितियों से वे बहुत दुःखी थे उनका कहना था कि जब तक देश की संसद में आर्य समाजी विचारधारा के व्यक्ति नहीं पहुंचेंगे तब तक देश का कल्याण नहीं हो सकता। उन्होंने इस दिशा में काफी प्रयास भी किये कि चुनावों में आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित लोग आगे आयें। वे आर्य समाज को राजनीति में लाने के पक्षधर थे।

2009 में सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के अध्यक्ष के रूप में उनको नियुक्त किया गया और उन्होंने अपने कार्यकाल में आर्य समाज में फैले विवाद को समाप्त करने के लिए अथक प्रयास किये तथा सार्वदेशिक सभा के माध्यम से आर्य समाज को गति प्रदान करने में सराहनीय योगदान प्रदान किया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी के निधन पर अपनी अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती आर्य जगत की ऐसी विभूति थे जो वेद शास्त्रों में निष्णात विद्वान होने के साथ-साथ सुमधुर व्यक्तित्व के कारण समाज को नई दिशा प्रदान कर रहे थे तथा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे ओजस्वी वक्ता, समाजसेवी, त्याग और परोपकार की भावना से ओत-प्रोत उदार हृदय के महान व्यक्ति थे। उनके निधन से आर्य समाज ने एक अप्रतिम योद्धा खो दिया है जिसकी पूर्ति निश्चय ही आसान नहीं होगी। मुझे उनके जाने से व्यक्तिगत रूप से गहरा आघात लगा है।

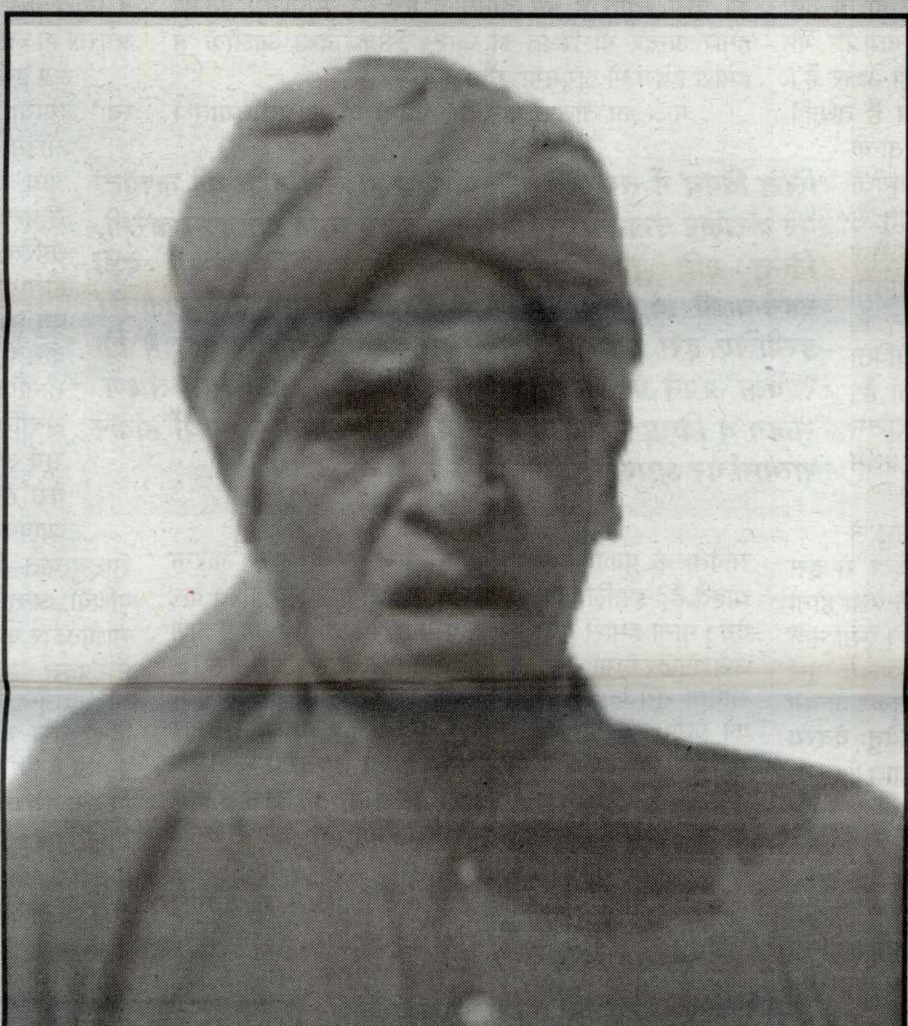

स्वामी जी ने कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के जीवन का मूल्यांकन एक वाक्य में करना चाहें तो यही कहेंगे कि उनका जीवन दूसरों को शीतलता प्रदान करने वाला था। उनके जीवन का मूल्यांकन वही व्यक्ति कर सकता है जो उनकी छत्रछाया में रहा हो। स्वामी जी ने कहा कि वैदिक साहित्य, संस्कृति एवं मानवता के प्रति समर्पित थे स्वामी सुमेधानन्द जी। सौभाग्य से मुझे उनके सान्निध्य का पर्याप्त अवसर प्राप्त हुआ है, और मैंने यह अनुभव किया कि उनका व्यक्तित्व चुम्बकीय था एक बार जो उनके सम्पर्क में आ गया वह उन्हीं का होकर रह गया। उनकी मिलनसारिता, सहज मृदु स्वभाव मधुर वाणी तथा आतिथ्य भावना प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करने में सक्षम थी। मानवीय गुणों के पुंज स्वामी सुमेधानन्द जी ने आर्य जगत में एक अलग और विशिष्ट पहचान बनाई थी। स्वामी जी ने कहा कि वेदमार्ग के अनुयायी, यज्ञों में असीम श्रद्धा तथा अन्यों के लिए प्रेरणा के पुंज तथा सादा जीवन उच्च विचार का मूर्तिमन्त रूप थे स्वामी सुमेधानन्द जी।

स्वामी जी ने कहा कि शारद यज्ञ में उनकी विशेष आस्था थी और पिछले कई वर्षों से अक्टूबर माह में स्वामी सुमेधानन्द जी दुर्लभ शारद यज्ञ का आयोजन करते थे और मुझे अत्यन्त आत्मीयता के साथ उसमें आमंत्रित करते थे, मैं उसमें कई बार गया। देश, जाति व समाज के कल्याण के लिए अत्यन्त श्रद्धा से वे इस पवित्र शारद यज्ञ का आयोजन करते थे। और उसमें हजारों व्यक्तियों को आमंत्रित भी करते थे। आज स्वामी जी हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका कृतित्व व्यक्तित्व हमेशा हम सबके लिए प्रेरणा बना रहेगा। मेरा उनको शत-शत नमन।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

गायत्री–गान

—डॉ० रामनाथ वेदालंकार

वैसे तो सभी वेदमन्त्र अनूठी भावगरिमा से भरे हुए हैं, परन्तु गायत्री मन्त्र भारतीय जनमानस में महामन्त्र के रूप में आदृत हुआ है। मनु ने इसकी महिमा के विषय में लिखा है कि परमेष्ठी प्रजापति ने तीनों वेदों से इसके एक–एक पाद को दुहा है। उन्होंने इसका जप ओंकारपूर्वक तथा भूः, भुवः, स्वः इन व्याहृतियों–सहित करने का विधान किया है और यह लिखा है कि जो वेदज्ञ विप्र दोनों संध्याकालों में इस मन्त्र का जप करता है उसे वेद पढ़ने का पुण्य प्राप्त हो जाता है।[1] यह भी कहा है कि जो द्विज उक्त विधि से एक हजार बार जप करता है, वह महीने–भर में बड़े–से–बड़े पाप से छूट जाता है जैसे, साँप केंचुली से।[2] मनु यह भी लिखते हैं वह परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।[3]

ओ३म् तथा व्याहृतियाँ–सहित लिखने पर प्रचलित गायत्री मन्त्र का यह रूप होता है–

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।
तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

–ऋ० ३.६२.१०; यजु० ३.३५, २२.९, ३०.२, ३६.३; साम० १४६२

इस गायत्री के तीन नाम प्रसिद्ध हैं– गायत्री ऋचा, सावित्री ऋचा और गुरु मन्त्र। गायत्री नाम का प्रथम कारण इसका गायत्री छन्द में निबद्ध होना है। जिस छन्द में तीन पाद होते हैं तथा प्रत्येक पाद में आठ–आठ अक्षर होते हैं उसे गायत्री छन्द कहते हैं। यदि किसी पाद में एक अक्षर कम हो अर्थात् ८ अक्षरों के स्थान पर ७ अक्षर हों तो वह छन्द निचृद्गायत्री कहलाता है। प्रस्तुत गायत्री भी निचृद्गायत्री है, यतः इसके प्रथम पाद में ७ ही अक्षर हैं। गायत्री छन्द वाले यद्यपि अन्य भी अनेक मन्त्र हैं तथापि गायत्री छन्द वाले मन्त्रों में अपनी विशेष अर्थगर्भता के कारण प्रस्तुत मन्त्र गायत्री कहा जाने लगा। गायत्री नाम का दूसरा कारण इसका गानार्थक 'गै' धातु से निष्पन्न होना है। इसके द्वारा भक्त भगवान् के तेज की प्राप्ति का गान करता है, अतः इसका नाम गायत्री है। उक्त ऋचा का नाम सावित्री इस कारण है, क्योंकि इसका देवता सविता है, अर्थात् ऋचा सविता विषयक है या सविता के तेज की इसमें प्रार्थना है। इसे गुरुमन्त्र इस कारण कहते हैं, क्योंकि वेदारम्भ संस्कार में गुरु इस मन्त्र के द्वारा ही ज्ञान की प्रथम दीक्षा देता है।

अब विचारणीय यह है कि यदि, जैसा मनु ने कहा है, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद इन तीनों वेदों से इस गायत्री ऋचा का एक–एक पाद दुहा गया है, तो ऐसा होना चाहिए कि प्रत्येक पाद स्वयं में पूर्ण अर्थवाला हो। ऐसा नहीं होना चाहिए कि प्रत्येक पाद को अलग–अलग पूर्ण अर्थवाला न मानकर दूसरे पादों से शब्दों को लेकर अन्वय करें। प्रचलित अर्थ–प्रक्रिया यह है– **(वयम्) सवितुः देवस्य तत् वरेण्यं भर्गः धीमहि, यः नः धियः प्रचोदयात्।** परन्तु इसमें प्रत्येक पाद का स्वतन्त्र अर्थ नहीं रहता, अतः आगे हम इस मन्त्र की ऐसी व्याख्या उपस्थित कर रहे हैं, जिसमें प्रत्येक पाद स्वतन्त्र रहता है।

मन्त्र का देवता 'सविता' है। सविता प्रकृति में सूर्य का नाम है। सूर्य के समान जो परम प्रकाशमान तथा प्रकाश का स्रोत है, वह परमेश्वर सविता है। सविता प्रभु स्वयं ही प्रकाशमान नहीं है, किन्तु सूर्यसम प्रकाशक होकर वह हम मानवों के हृदय में भी अपने उस प्रकाश को प्रेरित करने वाला है। सविता का अर्थ प्रेरक होता है, प्रेरणार्थक 'षू' धातु से यह शब्द बना है।

अब हम मन्त्र के भाव पर आते हैं।[4] मन्त्र के तीन भाग किए जा सकते हैं। तीन ही उसके चरण हैं, एक–एक चरण में एक–एक भाग आ जाता है। पहला भाग है– **"तत् सवितुर्वरेण्यम्।"** भक्त अपने भगवान् सविता के तेज और प्रकाश पर मुग्ध होकर कहता है– अहा ! देखो, सविता प्रभु की ज्योति कैसी वरणीय है। जो एक बार इसकी झांकी पा ले, वह इस पर लट्टू होकर आनन्द से नाचने लगे। जो एक बार इसके दर्शन कर ले, फिर वह इसे पाने के लिए लालायित हो उठे। सचमुच सविता की ज्योति ऐसी ही उज्ज्वल है। उपनिषत्कार उसकी महिमा का गान करते हुए कहते हैं–

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं,
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं,
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।।

कठ उप० ५.१५

अर्थात् ऐसी दिव्य उसकी ज्योति है कि उसके आगे सूर्य–चाँद–तारे सब फीके पड़ जाते हैं। बिजली की चमक उसके आगे कुछ नहीं, अग्नि की तो बात ही क्या! उसी ज्योति के पुञ्ज में से थोड़ी–सी ज्योति लेकर ये सब चमक रहे हैं।

तो उस ज्योति के लिए इस गायत्री मन्त्र में भक्त कह रहा है कि उस सविता की ज्योति बड़ी स्पृहणीय है। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि जब कोई व्यक्ति कोई अद्भुत वस्तु देखता है या उसके विषय में सुनता है, तब एकदम उसके मुख से उस वस्तु की स्तुति निकल पड़ती है। वैसे ही उपासक भगवान् की दिव्य ज्योति को देखकर उसकी स्तुति कर रहा है कि उस सविता की ज्योति वरणीय है अर्थात् ऐसी है कि उसे देखकर हर कोई चाहेगा कि यह ज्योति मुझे भी मिल जाए।

स्तुति के बाद प्रार्थना की बारी आती है। मनुष्य जिसकी स्तुति करता है। उसे फिर अपने लिए मांगता है। इसलिए सविता के प्रकाश की स्तुति के उपरान्त भक्त कह उठता है– **'भर्गो देवस्य धीमहि'**। सविता के जिस प्रकाश की ऐसी स्तुति है हम चाहते हैं कि वह स्पृहणीय प्रकाश हमारे अन्दर भी स्थित हो जाए; उसके दिव्य आलोक से हमारा हृदय भी जगमगा उठे।

मन्त्र का तीसरा भाग है– **'धियो यो नः प्रचोदयात्'**। सविता के प्रकाश को हम अपने अन्दर क्यों धारण करना चाहते हैं? इसलिए कि यह आकर हमारी बुद्धि को प्रेरित कर देवे। मानो हमारी बुद्धि प्रसुप्त पड़ी है, सविता प्रभु का प्रकाश उसे आकर जगा देगा और क्रिया में प्रेरित कर देगा, जैसे कि सविता सूर्य का प्रकाश प्रातः काल आकर सोये हुए प्राणियों को जगा देता है और कर्मों में प्रवृत्त कर देता है। हमारे हृदयों में प्रकाशक व प्रेरक सविता का उदय हो जाने पर हमारी बुद्धि के आगे एक उजाला खिल उठेगा, जिस उजाले में वह गहन–से–गहन विषयों का विवेचन कर सकेगी। हमारे आगे से अज्ञान का अंधेरा मिट जाएगा और ज्ञान–प्रकाश से हमारा अन्तःकरण आलोकित हो उठेगा। जैसे निष्क्रिय पड़ी किसी मशीन को कारीगर आकर प्रेरणा (मरम्मत) दे देता है, फिर वह चल पड़ी है और नयी–नयी वस्तुएँ उस मशीन से बनकर निकलने लगती हैं, वैसे ही निष्क्रिय–सी बनी हुई हमारी बुद्धि नवीन–नवीन कल्पनाओं और नवीन–नवीन विज्ञानों की सृष्टि करने में समर्थ हो सकेगी। सविता के प्रकश की किरण को पाकर हमारी बुद्धि कुण्ठित व किंकर्तव्य–विमूढ़ नहीं रहेगी, अपितु कुशाग्र तथा विवेक की ज्योति से आभासित व स्फुरित हो उठेगी। वैदिक कोष निघण्टु के अनुसार धी शब्द प्रज्ञा और कर्म[5] दोनों का वाची है। सविता प्रभु के द्वारा प्रदत्त अन्तः प्रकाश से हमारी बुद्धियाँ और क्रियाएँ दोनों ही लक्ष्य की ओर प्रेरित हो सकेंगी।

जिस विषय में तुम्हें संशय उपस्थित हो उसे बुद्धि की कसौटी पर कसकर देख लो। बुद्धि तुम्हारे लिए ऋषि का काम करेगी, किन्तु यदि बुद्धि कुण्ठित हो या अर्ध-निद्रित-सी पड़ी रहने-वाली हो, तब वह ऋषि का काम नहीं कर सकती। इसीलिए इस गायत्री मन्त्र में मनुष्य प्रार्थना कर रहा है कि सविता अपने प्रकाश से हमारी बुद्धियों को प्रकाशित, तीक्ष्ण, सजग व क्रिया में प्रवृत्त कर देवे, जिससे हम पुरुषार्थी होकर सन्मार्ग पर अग्रसर हो जाएँ।

यह इस गायत्री मन्त्र का भाव है। इससे हम कल्पना कर सकते हैं कि इस मन्त्र को इतना अधिक गौरवास्पद स्थान क्यों प्राप्त हुआ है और क्यों यह समस्त आर्य जाति का मूलमन्त्र बना हुआ है। 'यह है बुद्धि और ऊर्ध्वगति की स्फुरणा का गीत'। हमने अपने मूल मन्त्र में बढ़िया–बढ़िया स्वादिष्ट भोजन नहीं मांगे, असीम धन–दौलत नहीं मांगी, स्त्री–पुत्र–परिजन नहीं मांगे, मांगी है 'दिव्य प्रकाश से जगमगाती हुई बुद्धि और दिव्यक्रिया'। निःसन्देह वेदमन्त्रों में ऐसी प्रार्थनाएँ हैं कि हमें उत्तमोत्तम भोजन मिलें, भरपूर ऐश्वर्य मिलें, सौ वर्ष की आयु मिले, स्त्री–पुत्र–परिजन मिलें, परन्तु अपने मूलमन्त्र में हमने इन्हें नहीं मांगा है। हमारी मूल मांग है बुद्धि और क्रियाशीलता की। बुद्धि का झरना हमारे अन्दर झर पड़े तो बुद्धि के बल से तथा से अन्य सब ऐश्वर्यों को हम सहज में ही उपलब्ध कर सकते हैं। बुद्धि स्फूर्ति हो गई, सक्रियता, ऊर्ध्वगति एवं लक्ष्य की ओर प्रसरण आ गया तो मानो सब–कुछ मिल गया।

निरुक्त में एक प्रसंग आता है कि जब ऋषि पैदा होने बन्द हो गए तब मनुष्य देवों से बोले–अब कौन हमारा ऋषि होगा, जो हमें मार्ग दर्शाएगा? तब देवों ने उन्हें कहा कि 'तर्क' को ही तुम अपना ऋषि समझो। अर्थात् जिस विषय में तुम्हें संशय उपस्थित हो उसे बुद्धि की कसौटी पर कसकर देख लो। बुद्धि तुम्हारे लिए ऋषि का काम करेगी, किन्तु यदि बुद्धि कुण्ठित हो या अर्ध–निद्रित–सी पड़ी रहने–वाली हो, तब वह ऋषि का काम नहीं कर सकती। इसीलिए इस गायत्री मन्त्र में मनुष्य प्रार्थना कर रहा है कि सविता अपने प्रकाश से हमारी बुद्धियों को प्रकाशित, तीक्ष्ण, सजग व क्रिया में प्रवृत्त कर देवे, जिससे हम पुरुषार्थी होकर सन्मार्ग पर अग्रसर हो जाएँ।

अब इस गायत्री ऋचा के आरम्भ में जो **'ओ३म् भूर्भुवः स्वः'** लगाया गया है, उसका आशय भी देख लेना चाहिए। ओ३म् परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है जो 'अ, उ, म्' के योग से बना है। 'अ' से सृष्टि की उत्पत्ति, 'उ' से उत्पन्न सृष्टि का धारण तथा 'म्' से उत्पादित तथा धारित सृष्टि का अन्त में समय आने पर संहार सूचित होता है, अतः सृष्टि का उत्पादक, धारक एवं संहारक प्रभु 'ओ३म्' है। 'अ, उ, म्' के सम्बन्ध में भी मनु का कथन है कि ये वेदत्रयी से दुहे गए हैं[6], अतः ओ३म् तीनों वेदों का सार है। भूः, भुवः, स्वः से क्रमशः पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्यौ लोक सूचित होते हैं। जैसे सविता सूर्य अपनी किरणों से तीनों लोकों में पहुँचा हुआ है, वैसे ही ओंकारपदवाच्य परमेश्वर भी तीनों लोकों में व्यापक है। इस प्रकार प्रथम परमेश्वर के सृष्ट्युत्पत्ति–स्थिति–संहारकर्ता के रूप को तथा उसके पृथिवी, अन्तरिक्ष एवं द्यौ लोक में व्यापक होने के रूप को साक्षात्कार करने के उपरान्त ही भक्त गायत्री ऋचा के गान में प्रवृत्त होता है। भूः, भुवः, स्वः से परमेश्वर की सच्चिदानन्दस्वरूपता भी हृदयंगम होती है। उपासक प्रभु के दिव्य तेज को तीनों लोकों में सर्वत्र फैला हुआ देखकर कहता है कि यह तो सबके लिए बड़ा ही वरणीय है, ग्राह्य है। फिर दूसरे चरण में कहता है कि मैं चाहता हूँ यह तेज मुझे भी मिल जाए, मेरे अन्दर स्थित हो जाए। फिर तीसरे चरण में कहता है कि वह सविता प्रभु अपने तेज से मेरी बुद्धि एवं मेरे कर्म को आलोकित कर दे, दिव्यता की ओर प्रेरित कर दे।

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक छपकर तैयार

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

वैदिक उर्वशी, पुरुरवा एवं मित्रावरूण का रहस्य

– सूर्यदेव चौधरी

ऋग्वेद के दसवें मंडल के 95वें सूक्त में उर्वशी एवं पुरुरवा का संवाद मिलता है, जबकि ऋग्वेद के ही सातवें मंडल के 33वें सूक्त में उर्वशी एवं मित्रावरूण के सम्बन्ध का वर्णन है। पहले उर्वशी एवं पुरुरवा से सम्बद्ध एक मंत्र यहां उद्धृत किया जा रहा है, जो इस प्रकार है:-

विद्युन्न या पतन्ती दविद्योत् भरन्ती में अप्या काम्यानि।
जनिष्टो अपो नर्यः सुजातः प्रोर्वशी तिरत दीर्घमायुः।।

ऋ. 10/95/10

अर्थात् जो विद्युत के समान गिरती हुई, चमकती हुई, मेरी कामनाओं को जल रूप में पूर्ण करती है, वह जल से उत्पन्न अथवा जल को उत्पन्न करने वाली उर्वशी अच्छी प्रकार होकर मनुष्यों के लिए दीर्घायु को देती है।

इस स्थल पर और ऐसे ही कई अन्य स्थलों पर वेदों के कुछ भाष्यकार मानवीय इतिहास की कल्पना कर लिए हैं, जो उनके लौकिक एवं वैदिक संस्कृत के भेद एवं वेदार्थ शैली से अनभिज्ञता को सूचित करता है। इतना ही नहीं, कुछ लोग तो इस स्थल को विश्व की प्रथम प्रेम कथा तक कहने की धृष्टता करते हैं। ऐसे लेखक नहीं जानते हैं कि वेद वैदिक भाषा में हैं, लौकिक संस्कृत भाषा में नहीं तथा वेदों के शब्द यौगिक होते हैं, लौकिक संस्कृत की तरह रुढ़ि नहीं। देखने में समान प्रतीत होने वाली लौकिक एवं वैदिक संस्कृत में काफी अन्तर है अतः लौकिक संस्कृत के आधार पर वैदिक मंत्रों का ठीक-ठीक अर्थ नहीं किया जा सकता। वेद मंत्रों के यथार्थ को समझने के लिए निरुक्त एवं निघंटु का ज्ञान आवश्यक है। आगे हम निरुक्त एवं निघण्टु के आलोक में उपरोक्त उर्वशी एवं पुरुरवा के संवाद को समझने का प्रयास करते हैं।

पहले हम देखते हैं कि उर्वशी क्या है? निरुक्त 11/22 में मध्यस्थानी स्त्री देवताओं का वर्णन पाया जाता है, जिसमें अदिति से रोदसी तक का वर्णन है। इसी में उर्वशी का भी वर्णन है, जिससे यह प्रतीत होता है कि उर्वशी कोई मध्यस्थानी यानी उन्तरिक्षस्थ पदार्थ विशेष है, ऐतिहासिक नारी नहीं। इसी क्रम में निरुक्त 11/35 पर उर्वशी पद की व्याख्या की गई है। वहां तर्क एवं प्रमाण सहित दिखलाया गया है कि उर्वशी मेघस्थ विद्युत है। इसके अतिरिक्त अन्यत्र भी उर्वशी को विद्युत ही कहा गया है। निरुक्त 5/14 पर अपने भाष्य में स्कन्द स्वामी लिखते हैं कि नित्यपक्ष में उर्वशी विद्युत है- 'नित्यपक्षे तु उर्वशी विद्युत वशिष्ठोऽप्याच्छादित उदक संघातः'। यहींपर वे आगे कहते हैं कि विशेष रूप से चमकने वाली विद्युत ही उर्वशी है- 'विशेषण द्योतते इति विद्युत उर्वशी'। स्कन्द स्वामी अन्यत्र भी निसक्त 10/49 पर अपने भाष्य में उर्वशी को मध्यस्थानी यानी अन्तरिक्षस्थ विद्युत ही कहते हैं- 'उर्वशी मध्यस्थाना विद्युत'। आचार्य वररूचि के निरूक्त समुच्चय के 4/14 में भी कहा गया है कि अन्तरिक्ष में व्यापक होने से उर्वशी विद्युत का ही नाम है- 'उर्वशी विद्युत। उरु विस्तीणमन्तरिक्षमश्नुते इति'। अमरकोष में भी उर्वशी को मेघस्थ ही कहा गया है।

पूर्व उद्धृत ऋग्वेद 10/95/10 जो निरुक्त 11/36 में भी उद्धृत है, पर भाष्य करते हुए दुर्ग ने लिखा है कि विद्युत के समान अथवा विद्युत रूप उर्वशी अन्तरिक्ष में मेघों के मध्य जाती हुई पुनः चमकती है और जलों को मेघों से गिराती हुई लोगों को दीर्घायु प्रदान करती है- 'विद्युन्न विद्युदिव संप्रत्यर्थे वा नकारः। या पतन्ती गच्छन्त्यन्तरिक्षे मेघोदरेषु दविद्योत्। पुनः पुनः द्योतते भरन्ती हरन्ती में मम स्वभूतानि आप्यानि काम्यानि उदकानि यो उर्वशी सा यदैवमुदकानि हरन्ती मेघेभ्यः पतन्ती भृशं स्वयं विद्योतते .... प्रोर्वशी प्रवर्द्धयते दीर्घमायुः'।

इसमें उर्वशी को जो दीर्घायु प्रदान करने वाली कहा गया है उसका निम्नलिखित वैज्ञानिक कारण है 'ओजोन, जो आक्सीजन का सान्द्र रूप है, भी एक शक्तिशाली जीवाणुनाशक है और उस जीवाणु का भी नाश करने में सक्षम है जो संक्रामक बीमारी पैदा करते हैं। बिजली की कड़क में विद्युत संचार के कारण ओजोन काफी मात्रा में पैदा होता है, जिससे वायु को मानो नवजीवन मिलता है और बिजली कड़कने के बाद हम नई स्फूर्ति अनुभव करते हैं'। यही नहीं, पृथिवी के ऊपर एक ओजोन परत है, जिसे पृथिवी का रक्षा कवच कहा जाता है जिसके न रहने पर प्राणियों का जीवन असम्भव हो जाएगा। इसलिए भी उर्वशी को दीर्घायु दातृ नाम सार्थक है। चूंकि विज्ञान से सिद्ध बात है कि ओजोन की उत्पत्ति विद्युत से होती है, अतः जीवन रक्षक ओजोन को उत्पन्न करने वाली उर्वशी कोई अन्य पदार्थ नहीं, बल्कि विद्युत ही हो सकती है। ऋग्वेद के इस मंत्र 10/95/10 पर भाष्यकार स्कन्द का कथन है कि विद्युत के समान या विद्युत रूप स्तनयित्नु लक्षणा वाणी का अधिदेवता उर्वशी है- 'विद्युदिव या उर्वशी स्तनयित्नुलक्षणया वाचो अधिदेवता'। इन सभी प्रमाणों से उर्वशी आकाशीय विद्युत सिद्ध होती है।

पुरुरवा

अब हम देखते हैं कि पुरुरवा क्या है? उणादि सूत्र 4/232 के आधार पर पुरु रु धातु से पुरुरवा शब्द बनता है, जिसका अर्थ होता है- 'बहुत शब्द करने वाला'। आचार्य वररुचि ने अपने निरुक्त समुच्चय के 4/14 तथा यास्क ने अपने निरुक्त 10/46 में भी यही भावार्थ प्रकट किया है। निरुक्त 10/11 पर मध्यस्थानी यानी अन्तरिक्षस्थ देवताओं का तथा निरुक्त 12/1 पर द्युस्थानी देवताओं का वर्णन मिलता है। इसी क्रम में निरुक्त 10/46 में पुरुरवा का वर्णन है। इस वर्णन से पुरुरवा कोई अन्तरिक्षस्थ पदार्थ विशेष प्रतीत होता है, कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं। निरुक्त 10/46 के अपने भाष्य में स्कन्द स्वामी ने लिखा है- 'पुरुरवा मध्यस्थानः .....। सः कस्मात्? बहुधा रोरुयते। अनेक विधमत्यर्थ स्तनयित्नु लक्षणं शब्दं करोति इतिपुरुरवा है। वह किसलिए? बहुत प्रकार के शब्द करने के कारण तथा अनेक गर्जनादि लक्षण के कारण वह पुरुरवा है। हम जानते हैं कि अन्तरिक्षस्थ पदार्थों में शब्द एवं गर्जन आदि लक्षण मेघ में ही घटित होता है। अतः पुरुरवा को मेघ मान लेने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। वस्तुतः पुरुरवा मेघ ही है। यह बात यजुर्वेद एवं शतपथ ब्राह्मण से भी सिद्ध होती है, क्योंकि यजु. (26/10) में 'कनिक्रददेवः पर्जन्यः' एवं शतपथ 6/7/3/2 में 'क्रन्दतीव पर्जन्यः' है, जिसका अर्थ है कि मेघ गर्जन करने वाला है। इस तरह पुरुरवा मेघ सिद्ध होता है।

इस प्रकार तर्क एवं प्रमाणों से यह बात सिद्ध होती है कि उर्वशी आकाशीय विद्युत एवं पुरुरवा मेघ है, कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं।

उर्वशी एवं मित्रावरुण

अब हम उर्वशी एवं मित्रावरुण के सम्बन्ध विषय पर विचार करते हैं। कहा जाता है कि उर्वशी के साथ मित्रावरुण के संयोग से वशिष्ठ की उत्पत्ति हुई। इससे सम्बद्ध एक मंत्र इस प्रकार हैः-

उतासि मैत्रावरुणो वशिष्ठोर्वश्याः ब्रह्मन्मनसोऽधिजातः।
द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वेदेवाः पुष्करे त्वाऽददन्त।।

- ऋ. 7/33/11

अर्थात् हे ब्रह्मन वशिष्ठ! तू मित्र एवं वरुण का पुत्र हो और उर्वशी के मन से उत्पन्न हुए हो। अन्तरिक्ष में प्राप्त तुझ गतिशील को विश्वेदेवा दिव्य ज्ञान के द्वारा देवें अर्थात् ज्ञानपूर्वक उपयोग के लिए देवें।

पहले यह सिद्ध किया जा चुका है कि उर्वशी आकाशीय विद्युत है कोई नारी विशेष नहीं। इससे एक बात तो स्पष्ट है कि उर्वशी जब आकाशीय विद्युत है, तो उसके साथ सम्बन्ध स्थापित करने वाला और उससे उत्पन्न होने वाला भी कोई व्यक्ति या प्राणी विशेष नहीं हो सकता, क्योंकि विद्युत के साथ किसी प्राणी का सम्बन्ध स्थापित करके संतान उत्पन्न करना सम्भव नहीं है। तो फिर मित्र, वरुण एवं वशिष्ठ हैं क्या चीज? आगे इस प्रश्न का सप्रमाण उत्तर खोजते हैं।

इस मंत्र पर निरुक्तकार यास्क ने निरुक्त से लिखा है कि 'उर्वशी को देखकर मित्र एवं वरुण का रेतः पात हो गया' - 'तस्याः (उर्वश्याः) दर्शनात् मित्रावरुणयोः रेतश्चस्कन्द' (निरुक्त 5/13) लेकन निघण्टु में रेतः शब्द का अर्थ जल भी किया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि उर्वशी (विद्युत) को देखकर मित्रावरुण से जल पात हुआ। जब उर्वशी पूर्व में अनेकशः प्रमाण से विद्युत सिद्ध हो चुकी है और यहां निघण्टु के आधार पर रेतः जल का भी वाचक है, तो मित्र वरुण भी कोई ऐसे ही पदार्थ होने चाहिए, जिसमें विद्युत संचार होने पर जल की उत्पत्ति होती हो। इससे किसी वैज्ञानिक घटना का संकेत मिलता है। जब हम शतपथ ब्राह्मण पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि उसमें अनेक स्थानों पर मित्र एवं वरुण को दो वायु विशेष के रूप में चिन्हित किया गया है, जिसे क्रमशः प्राणवायु एवं उदानवायु कहते हैं- (क) 'प्राणोदानौ वै मित्रावरुणौ' (शत. 1/8/3/12) एवं (ख) 'प्राणोदानी मित्रावरुणौ' (शत. 3/2/2/13)।

अब हम आधुनिक विज्ञान पर दृष्टि डालते हैं विज्ञान से आज सिद्ध है कि आक्सीजन एवं हाइड्रोजन नामक दो गैसों में विद्युत संचार कराने पर जल का निर्माण होता है। इस वैज्ञानिक सत्य के साथ जब हम उपरोक्त उर्वशी तथा मित्रावरुण की तुलना करते हैं तो पाते हैं कि उर्वशी विद्युत का स्थान लेती हैं और मित्र वरुण क्रमशः ऑक्सीजन एवं हाइड्रोजन के स्थान पर आते हैं। उर्वशी पहले ही विद्युत सिद्ध हो चुकी है और शतपथ ब्राह्मण से मित्र वरुण क्रमशः प्राणवायु एवं उदानवायु सिद्ध होते हैं। प्राणवायु ऑक्सीजन है और विज्ञान एवं वैदिक साहित्य से प्राप्त गुण साम्य के कारण उदानवायु हाइड्रोजन सिद्ध होता है, क्योंकि विज्ञान भी हाइड्रोजन को ऊपर उठने वाली हल्की गैस कहता है और योग दर्शन के व्यास भाष्य में भी उदानवायु को ऊपर उठने वाला कहा गया है- 'उन्नयनात् उदानः' (व्यास भाष्य-3/39)। तब वशिष्ठ वृष्टि जल ही होगा, क्योंकि पहले ही कहा जा चुका है कि 'नित्य पक्षे तु उर्वशी विद्युत वशिष्ठोऽप्याच्छादित उदक संघातः' (निरुक्त- 5/14)।

इस प्रकार उर्वशी एवं मित्रावरुण का यह पूरा प्रकरण ही प्राणवायु (ऑक्सीजन) एवं उदानवायु (हाइड्रोजन) के साथ उर्वशी (आकाशीय विद्युत) के संचार से वशिष्ठ यानी वृष्टि जल की उत्पत्ति का अलंकारिक किन्तु वैज्ञानिक वर्णन है। ध्यातव्य है कि वैदिक साहित्य में अपत्य (संतान) वाचक प्रत्यय जड़ पदार्थों में भी पाए जाते हैं। साथ ही यह भी ध्यातव्य है कि उर्वशी, पुरुरवा एवं मित्रावरुण तथा वशिष्ठ आदि शब्दों का प्रकरण भेद होने पर अन्य अर्थ भी सम्भव है, लेकिन इस प्रकरण में उपरोक्त अर्थ ही तर्कसंगत है। मानवीय संवाद या कथानक प्रतीत होने वाले ऐसे अनेक स्थल वेदों में है, जिसमें छिपे वैज्ञानिक सत्य को प्रकट करने के लिए विशेष अनुसंधान की आवश्यकता है।

- मन्त्री, छोटानागपुर, रांची-1

सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए

– वेद प्रकाश गुप्ता

आर्यों को सत्य सत्य बातों को जानने, सत्य के रास्तों पर चलने के लिये निरंतर जिज्ञासु जागरुक कृतसंकल्प होना अतिआवश्यक है। अगर पूंछा जाये कि आर्य समाज और अन्य समाजों, धर्मों में मुख्यतः क्या क्या अतंर है? ध्यान करने पर मुख्य अंतर यह है कि यहाँ अंधविश्वास नही है, हर किसी को स्वयं निर्णय करना है कि क्या सत्य, उचित है, क्या असत्य अनुचित है। हमेशा सत्य सर्वकल्याणकारी कार्यो, कर्मो को ही करना है। इसके दिशा निर्देश के लिये आर्य समाज के 10 नियम हैं, वेद हैं एवं अन्य ग्रंथ हैं। हम सभी को आर्य समाज के 10 नियमों को प्रतिदिन ध्यान, स्मरण करना है जिससे हम आर्य समाज के सिद्धातों के विरुद्ध कोई कार्य नही कर सकें। इन नियमों में से, नियम 4 "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए," तथा नियम 5 "सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य, लाभदायक और हानिकारक होने का विचार करके करना चाहिए"। स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3 के 27 वें पृष्ठ में लिखा है "चारों वेद ही ईश्वरकृत हैं। अन्य ग्रंथ, चार वेदों के उपवेद इत्यादि सब ऋषि मुनि के किये ग्रन्थ हैं। इनमें जो–जो वेद विरुद्ध प्रतीत हों, उस–उस को छोड़ देना।" अतः हमें यह ध्यान रखना है कि गलती किसी भी मानव से हो सकती है चाहे वह कोई भी, ऋषि मुनि हों। अगर हमसे कोई गलती जाने अनजाने में होती है तो हम ही जिम्मेदार होगें। गलती हमसे आपसे किसी भी ऋषि मुनि तथा महापुरुष से भी अनजाने में हो सकती है। वेदों एंव अन्य समस्त पुस्तकों के मंत्रों के शब्दों के अर्थ सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–1 के द्वितीय पृष्ठ पर जैसा स्वामी दयानंद जी ने लिखा है कि वेद मंत्रों आदि के शब्दों के अर्थ वही लेने चाहिये जो प्रकरण, प्रसंग के अनुसार उपयुक्त, और सर्वलाभदायक यानी सत्य हों। इसमें सैन्धव शब्द का उदाहरण भी लिखा हुआ है। स्वामी दयानंद जी को यह शंका संज्ञान में रहा होगा कि समस्त सावधानियां बरतने के बावजूद उनसे भी पुस्तकों में त्रुटियां हो सकती हैं इसी कारण उन्होनें सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक के भूमिका के दूसरे पष्ठ में लिखा है कि "हाँ, जो वह मनुष्यमात्र का हितैशी होकर कुछ जनावेगा, उसको सत्य सत्य समझने पर, उसका मत संग्रहीत होगा।" अतः इसके अनुसार किसी भी पुस्तक, कर्मकांड में त्रुटि पाये जाने पर हम सभी को सुधार करने के लिये तत्पर होना चाहिए।

— वेद प्रकाश गुप्ता, मो. 09451734531, 08860873963

स्वादिष्ट, सुगन्धित और पौष्टिक तत्त्व युक्त आम

– मधुर प्रकाश शास्त्री

आम सर्वजन सुलभ और सुपाच्य भी है। यह इतना स्वादिष्ट, सुगन्धित और पौष्टिक तत्त्व युक्त होता है कि इसे 'फलों का राजा' कहा जाता है।

उपयोग – आम को खाने के अलावा चिकित्सा में भी उपयोग किया जाता है।

आम का रस एवं दूध आम का सर्वश्रेष्ठ और अत्यन्त गुणकारी उपयोग इसका रस और दूध का एक साथ सेवन करना है। पके आम के रस में विटामिन 'ए' और विटामिन 'सी' भारी मात्रा में मौजूद रहते हैं। नेत्र ज्योति तथा शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने के लिए विटामिन 'ए' और चर्म रोग रक्त विकार नष्ट करने के अलावा, बाल, दांत व रक्त के लिए विटामिन 'सी' अच्छा काम करते हैं। आम के रस में पर्याप्त मात्रा में दूध मिला दिया जाए तो इसके गुणों में भारी वृद्धि हो जाती है और यह रक्तवर्धक टॉनिक का काम करता है। कमजोर, दुबले-पतले शरीर वाले लड़के-लड़कियाँ एवं रक्ताल्पता, क्षय, रक्त विकार, धातु दौर्बल्य और वीर्यक्षय के रोगियों के लिए आम के रस व दूध का सेवन अत्यन्त गुणकारी होता है। इस मिश्रण में मृदु विरेचक गुण होता है अत: कब्ज के रोगियों के लिए यह बहुत उपयोगी होता है। अम्लपित्त, आंतों की कमजोरी, संग्रहणी, अरुचि, यकृत-वृद्धि, यौनशक्ति की कमी आदि व्याधियों को दूर करने के लिए आम का रस और दूध का सेवन करना उत्तम है।

आम के पत्तों को पानी में डालकर उबालें। जब पानी एक चौथाई शेष बचे तब उतार कर ठण्डा कर लें और 1-2 चम्मच शहद डालकर गरारे करने व पी जाने से गला ठीक हो जाता है।

स्त्रियों के रक्तप्रदर और खूनी बवासीर के रोगियों के रक्त स्राव को रोकने के लिए, उन्हें आम की गुठली की गिरी का महीन चूर्ण 2-3 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सुबह-शाम सेवन करना चाहिए। इसके कोमल पत्तों को पानी के साथ घोंट पीसकर छानकर, थोड़ी शक्कर मिलाकर पीने से भी लाभ होता है।

आम का अधिक सेवन हानिकारक होता है। इससे अपच, रक्त विकार, ज्वर, कब्ज आदि रोग उत्पन्न होते हैं। आम को उचित एवं अनुकूल मात्रा में ही दूध के साथ सेवन करना चाहिए। खट्टा आम नहीं खाना चाहिएं आम खाने पर यदि अपच की स्थिति बने तो आधा चम्मच

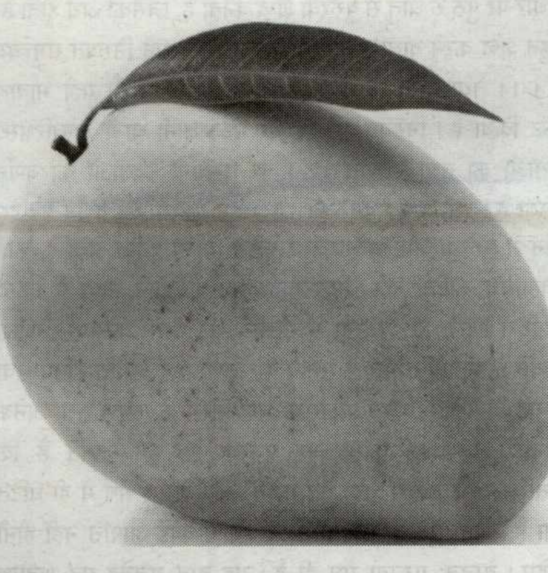

सोंठ-चूर्ण, ठण्डे पानी के साथ लें या एक गिलास दूध में सोंठ-चूर्ण डालकर थोड़ी देर उबालें और पी लें। इसके सेवन से आम खाने से हुआ अपच ठीक हो जायेगा।

आम से रोगोपचार

उपलों में भुनी हुई या पानी में औटाई हुई कच्ची कैरी को पानी में मसल कर उसके रस को छान लें। उसमें शक्कर, भुना हुआ जीरा, काली मिर्च, पिसा हुआ पुदीना एवं नमक इन सबको मिलाकर स्वास्थ्यवर्द्धक एवं स्वादिष्ट शर्बत बनाया जा सकता है। इसका प्रयोग करने से लू, धूप का प्रभाव मिट जाता है। भुनी हुई कच्ची कैरी के रस का शरीर पर मर्दन करने से उष्णता का असर नहीं होता हैं आम का मुरब्बा कच्ची कैरी से बनता है। यह पौष्टिक, धातु विकृति नाशक एवं क्षुधावर्द्धक होता हैं। इसे खाकर पानी नहीं पीना चाहिए। दूध पिया जा सकता है लेकिन दूध पीकर इसे नहीं खाना चाहिए। यह एक महारसायन है। यह आधि-व्याधि नाशक, बल, वीर्यवर्धक, नवयौवन एवं नई स्फूर्ति प्रदायक है। यह दिमाग और दिल को एक दिव्य शक्ति प्रदान करता है। कंठ में तेज और वाणी में ओज भरता है।

कच्ची कैरी की तीन प्रकार से चटनी बनाई जाती है। यह खाने में स्वादिष्ट, क्षुधा, अग्नि एवं बुद्धिवर्धक होती है, लेकिन अम्लपित्त के रोगी के लिए यह सर्वदा वर्जनीय है।

आम का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए रामबाण औषधि है। यह कोष्ठबद्धता को दूर कर शौच साफ लाता है।

आम के फूल शीतल, रक्त-शोधक, कफ, पित्त, प्रमेह और अतिसार नाशक है। फूलों का क्वाथ एवं चूर्ण, इनके साथ चतुर्थ भाग मिश्री मिलाकर प्रात: सायं शीतल जल के साथ सेवन करने से अतिसार, प्रमेह, रक्तदोष, दाह एवं पित्त के कष्ट दूर हो जाते हैं। फूलों के रस में शक्कर मिलाकर सेवन करने से भी सारे रोग दूर भाग जाते हैं।

आम की गुठली की गिरी को पानी में भिगो कर एवं पीसकर आग से जले स्थान पर लेप करने से जलन शान्त हो जाती है। आम की गुठली की गिरी का दो ग्राम चूर्ण प्रतिदिन सेवन करने से बवासीर, रक्तप्रदर और रक्तातिसार का खून बंद हो जाता है।

आम की गुठली घिस कर पागल कुत्ते, बिच्छु एवं सामान्य सांप के द्वारा काटे हुए स्थान पर लगाने से विष उतर जाता है।

2804, बाजार सीताराम, दिल्ली-110006,
मो.:-9810431857

पौधारोपण से अनावृष्टि, अतिवृष्टि व ग्लोबल वार्मिंग से बचा जा सकता है

– प्रवेश आर्या

1 अगस्त 2015 : पौधारोपण से अनावृष्टि, अतिवृष्टि व ग्लोबल वार्मिंग से बचा जा सकता है ये शब्द बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली जिला रोहतक में देश के पूर्व राष्ट्रपति श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम आजाद व प्रसिद्ध समाज सेवी व आर्य समाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री सेठ रामधारी आर्य की याद में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम के बाद कहे। सर्वप्रथम यज्ञ के माध्यम से दोनों महान आत्माओं की शांति व सद्‌गति की कामनाएँ की गई।

उन्होंने कहा के पूर्व राष्ट्रपति का पूरा जीवन देश व समाज के लिए समर्पित रहा। उन्होंने अपने जीवन को परोपकार के लिए ही सर्वात्मना आहूत किया। उनकी स्मृति में आज का ये पौधा रोपण इसलिए ही किया जा रहा है क्योंकि यज्ञ के माध्यम से जितना परोपकार होता है उससे भी अधिक पौधारोपण से होता है। आज पूरे विश्व में चल रहे अनावृष्टि, अतिवृष्टि व ग्लोबल वार्मिंग के प्रकोप को सिर्फ पौधारोपण के माध्यम से कन्ट्रोल किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि सिर्फ पेड़ लगाना ही लक्ष्य न हो बल्कि उसका पालन पोषण करने की भी जिम्मेदारी लें। क्योंकि जिस तरह एक बच्चे की परवरिश की जाती है उसी तरह एक पौधा भी देखभाल मांगता है।

इस अवसर पर सर्वप्रथम रूद्राक्ष, पीपल, नीम बरगद, आँवला, चीकू, अर्जुन ,जामुन व अमरुद के पौधे लगाये गए।

इस अवसर पर बहन पूनम आर्या, दयानंद शास्त्री ,राजबीर वशिष्ठ, डॉ नारायण सिंह, डॉ महावीर आर्य, लक्ष्मीनारायण जिंदल, बाबूलाल जिंदल,विक्की जिंदल, जिले सिंह कुंडू, अजयपाल कुंडू , मोनू आर्य, स्वामी गोपालानंद , सतेंद्र आर्य, धर्मदेव, अखिलेश आर्य आदि उपस्थित रहे।

– दीक्षेंद्र आर्य
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य
युवक परिषद(हरियाणा)

डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान को पत्नी शोक

आर्य जगत के विख्यात विद्वान् तथा ''वैदिक सार्वदेशिक'' के पूर्व प्रबन्ध सम्पादक डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी जी का 24 जुलाई, 2015 दिन शुक्रवार को निधन हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ चल रही थी। श्रीमती कमला देवी अत्यन्त धर्मपारायण महिला थी तथा अपने पति डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान जी के कदम से कदम मिलाकर उनको हर प्रकार का सहयोग प्रदान करती रही। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए उन्हें एक धर्मपारायण विदुषी महिला बताया। सार्वदेशिक सभा परिवार ने विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्‌गति तथा आत्मीय जनों को दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

विश्वकर्मा पब्लिक स्कूल में आयोजित हुआ कार्यक्रम

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय प्रधान बहन पूनम आर्या ने दिलवाया बेटी बचाने का संकल्प

देश के नव निर्माण में लड़कों व लड़कियों की बराबर की भूमिका है –पूनम आर्या

(रोहतक): देश के नव निर्माण में लड़कों व लड़कियों की बराबर की भूमिका है। इसलिये दोनों को समाज में बराबर का अधिकार मिलना चाहिये। लड़कियों को भी लड़कों के समान अधिकार व अवसर दिये जाने चाहिये। तभी देश उन्नति व प्रगति करेगा। सही मायने में नव निर्माण की भूमिका तभी निभाई जा सकती है जब प्राथमिक स्तर पर ये भेदभाव समाप्त होगा। यह वाक्य अपने मुख्य उदबोधन में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय प्रधान बहन पूनम आर्या ने रोहतक शहर में स्थित विश्वकर्मा पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में कहे। उन्होंने आगे कहा कि आज हमारे आदर्श शहीदे आजम भगत सिंह या नेता जी सुभाष चंद्रबोस व रानी लक्ष्मी बाई जैसी महान हस्तियां न रहकर उनकी जगह सभी ने फिल्मी जगत के कलाकारों को दें दी है, उसी का परिणाम है कि नवयुवक दिग्भ्रमित हो रहे हैं।

यदि इन युवाओं को बचाना है तो इनमें नैतिकता की भावना भरनी होगी। ये कार्य सबसे पहले स्कूलों से ही होना चाहिये क्योंकि दूसरी किसी भी संस्था के पास इसकी कोई योजना व्यवहारिक रुप में लागू करने की नही है।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने सभी को अपना लक्ष्य अभी से निर्धारित करने का आहवान किया उन्होंने कहा कि अभी से निश्चित व सार्थक प्रयत्न भी शुरू कर दो अपने लक्ष्य की प्राप्ति करो।

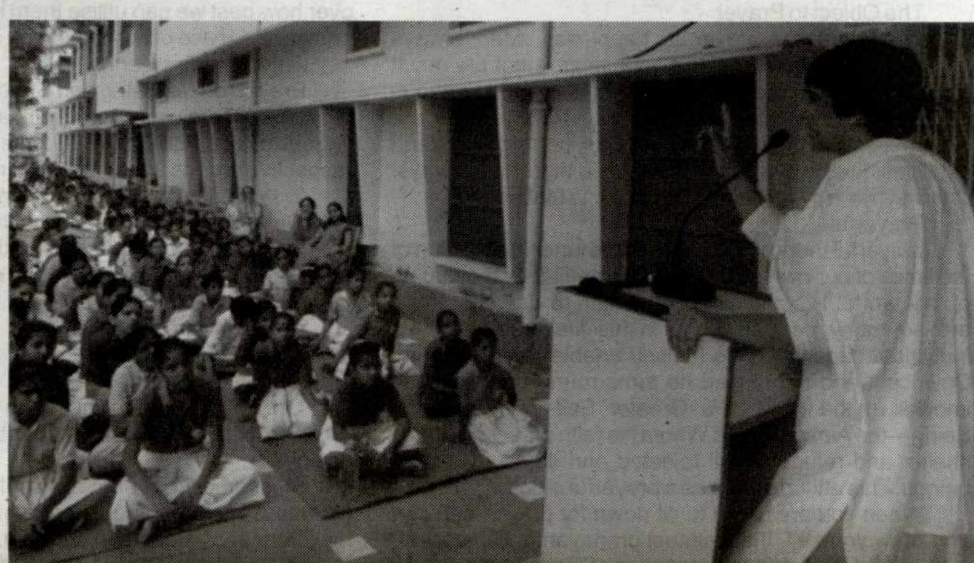

वर्तमान समय में समाज में जो सामाजिक प्रदूषण फैल रहा है उसके सबसे ज्यादा जिम्मेदार माता–पिता हैं क्योंकि सबसे बड़ी निर्माणशाला हमारा घर है जहाँ एक बच्चे को मानवता का पाठ पढाया जाता है परन्तु दुर्भाग्य है कि आज माता पिता अपनी जिम्मेदारी से भाग रहे हैं जिसका दुष्परिणाम यह है कि युवा दिन प्रतिदिन नशे व अन्य व्यसनों से अपना चारित्रिक पतन कर रहे हैं जिससे समाज प्रतिदिन दूषित हो रहा है व मानवता की जगह दानवता अपने पैर पसार रही है

बहन पूनम आर्या ने उपस्थित छात्र व छात्राओं एवम सभी अध्यापक व अध्यापिकाओ को भी बेटी बचाने का संकल्प करवाया। इस अवसर पर प्रिन्सिपल बी .आर. ड्रोलिय ने आये हुवे अतिथियों को सम्मानित किया। नैतिक शिक्षा के अतिरिक्त योग पर भी विचार प्रकट किये। इस अवसर पर आशा, सुमन व सुषमा के अतिरिक्त कई गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

बेटी बचाने का संकल्प दिलवाया

खरकड़ा रोहतक में सैकड़ों लोगों ने डाली यज्ञ में आहुति

रोहतक : जिले के ऐतिहासिक गांव खरकड़ा में 2 अगस्त, 2015 को बेटी बचाओ अभियान के तत्वावधान में बेटी बचाओ यज्ञ का आयोजन किया गया। यह यज्ञ बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय प्रधान बहन पूनम आर्या के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने उपस्थित सैकड़ो लोगों से बेटी बचाने का आह्वान किया। सभी उपस्थित जनों ने यज्ञ में आहुति डालकर संकल्प भी लिया।

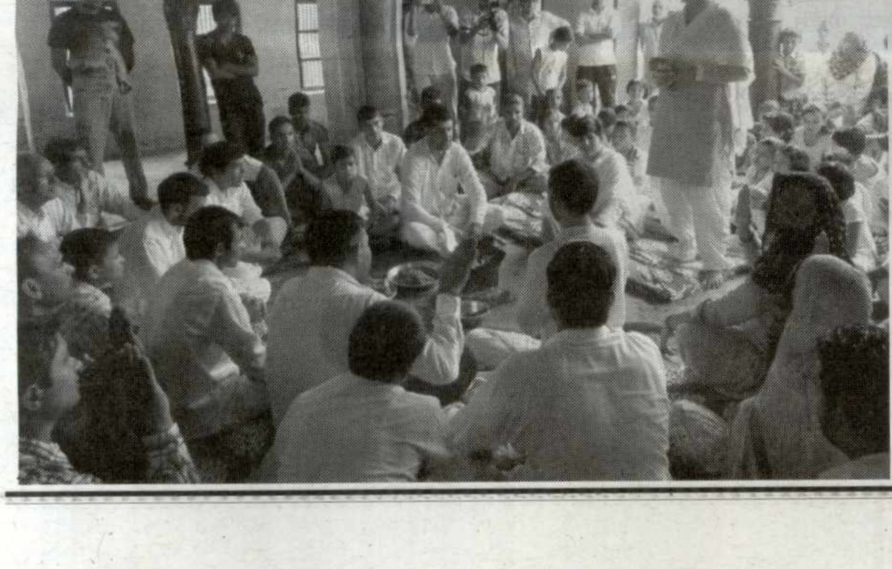

अपने मुख्य उद्बोधन में बहन पूनम आर्या ने कहा कि आज नारी को सम्मान व स्वाभिमान से जीने के लिए सभी को सहयोग देना होगा क्योंकि एक नारी ही किसी भी सन्तान का पहला गुरु होती है। प्रथम पाठशाला में मुख्य प्रशिक्षण माँ के द्वारा ही दिया जाता है। माँ ही बच्चे का निर्माण करती है। परन्तु यदि निर्माण करने वाली ही नहीं होगी तो सृष्टि आगे कैसे बढ़ेगी। इसलिए सृष्टि के आधार पर नारी जाति को सम्मान के साथ जीने का अधिकार देना चाहिए। इस अवसर पर बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या, परिषद् के प्रान्तीय प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र, तक्षशिला शिक्षण संस्थान के प्रमुख सुरेन्द्र सिवाय को सम्मानित किया गया।

सभी अतिथियों ने इस अवसर पर अपना उद्बोधन दिया व बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्ता मधु आर्या व उसकी सहेलियों ने संगठन गीत भी सुनाया।

इस कार्यक्रम के संयोजक योगाचार्य सोमवीर आर्य ने सभी का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर श्रीमती उदयकौर, राजेश कुमार, धर्मेन्द्र, पवन कुमार, राहुल, मुंकदलाल, विकास राठी, पुनीत आर्या, सुरेन्द्र कुमार और सुनील आर्य आदि माजूद थे।

– सोमवीर आर्य

DAILY PRAYER

bY
Mahatma Narayan Swami

Ethical Value of Prayer

Man is considered to be the highest and loftiest creation in the scale of evolution.

He is born to perform duties in distinguishing him from animals at every step. These duties are three-fold.

1. Man's duties towards himself.
2. Man's duties towards others.
3. Man's duties towards God.

All These duties are epitomised in the "Daily Prayer" called the Brahma Yajna or Sandhya, which he is enjoined to perform twice daily, in the morning and evening, to give expression to his innermost feelings, hankerings and longings Prayer is, as a matter of fact, a universal instinct. It appears as if it has been wrought into human nature. Man prays because he cannot help praying. He derives out of prayer a certain satisfaction which he can derive from no other human activity.

The greatest value of prayer lies in its educational and moral effect, in the spiritual discipline which is must to those who pray. Prayer is a blessing in itself. It is undoubtedly a means of devloping human beings in the highest and truest sense. perhaps, there is no means to moral culture superior to the belief in and exercise of prayer. One who prays earnestly does immediately feel within himself or herself the quickening and refining influence of prayer.

The Object to Prayer

The object of prayer is happiness. Man always hankers after happiness. But happiness is not the result of idle hankering it is an achievement through strenuous living of the life of a good citizen. Man strives for happiness. He makes it the goal of his ambition and activities. It is his Summum bonum. To this end he prays. The first hymn given below is a prayer to that end.

Prayerful Mood

prayerful mood is the result of the inner recognition of the limits of our own powers. Man is baffled by the buffets of this world. His difficulties drive him to despair. There are so many contradictions in his life that he in his individual capacity, finds himself unable to solve them. Downcast and depressed he turns round and tries. He knocks at the door of a Greater Self—the Supreme Being—the Almighty God Whom his faith prescribes to be shelter and refuge for all rejected and dejected human beings. This attitude induces a prayerful mood.

When you are going to sit down for prayer, see that you draw yourself, that spiritual pranayama, Consecrate yourself be filled with the presence of God. Yield yourself to Him not with a passive acquiesence, a sentimental quietism but with an earnest, energetic direction of all your faculties to achieve something supreme through your contact with the all-embracing Spirtual Presence. When you bring yourself in this mood, you acquire the right, the privilege and the incentive to prayer offered in this mood will be effective, fruitful and regenerative.

ACHMAN MANTRA

Prayer for Peace and Happiness

(Place some water in the right palm and after reciting the following mantra do achman (sip it). Do this three times).

1. Om shanno devi rabhishtaya apobhavantu pitaye Shanyo rabhisravantu nah.

May the supreme Being —the giver of light, the All-Pervading Lord, blissful to us in the attainment of our desired end, i.e. happiness! May He shower on us His Peace and Happiness!

In this hymn we have our goal before us. We picture before or mind's eye the object we pray for—the end that we strive to attain. But we know, Happiness does not come to us through idle wishing, through passive brooding or inactive longing. It is to be achieved through struggle, active striving and strenuous living. For that we need performance of certain duties-duties to ourselves and duties to other.

Man's Duties Towards Himself

Our duty to ourselves consists of the great preparation for the supreme goal.

Our 'self' of body, mind and spirit. It is spirit that functions through the body and mind. All our success in life depends upon this right and correct functioning which requires regular discipline both of body and mind. Body, as a matter of fact, is seat of mind and its health contributes to the health of mind itself. Body consists of sense organs and its health and efficiency means the health and efficiency of these sense-organs individually as we recite the following hymn, touching them, and think over how best we can utilise them in our personal service and in the service of our fellowmen around us.

Anga sparsha mantra

Prayer for Wellbeing and Strength

(Take some water in the left palm. Dip the two middle fingers of the right hand into the water and touch the respective organs as the following mantras are recited.

2. Om Vak vak (both sides of the mouth)
Om Pranah Pranah (both nostrills)
Om Chakshuh Chakshuh (both eyes)
Om Shrotram Shrotram (both ears)
Om Nabhih (naval cord)
Om hridayam (heart)
Om Kanthah (throat)
Om Shirah (head)
Om Bahubhyam Yashobalam (both Shoulders)
Om Karatalakara Prishthe (both plams, front and back)

Blessed be Thy name O Lord! May thou strengthen and bless my organs of speech, my respiratory system, my organs of sight and hearing, my centres of love, feeling and heart, my throat and brain, my arms and hands, both for personal end and for the good of my fellowmen amidst whom I live!

It is to be distincitly understood that happiness results from the proper use of the sense-organs. Their strength is therefore, the first condition of happiness. God is invoked in the above hymn to come to our aid and bless our organs. We have to mentally, go over each organ, think of its use and misuse with a view to adopt the former and avoid the latter.

MARJANA MANTRA

Prayer for Purity of Body

Next in order is the purificatory hymn. The recitation of which urges the devotee to rouse each sense-organ to its normal function or activity as it enjoins a prayer for the correct and right use of each bodily organ. One has always to remember that our miseries are of our own making and those who want to avoid them must first control their senses and guide them unto nobler, higher and purer purposes.

Take again some water in the left palm and, dipping the two middle fingers of the right hand, sprinkle water over the various organs with the recital of the undermentioned mantras as indicated hereunder).

3. Om Bhuh Punatu Shrasi (head)
Om Swah Punatu Kanthe (throat)
Om Mahah Punatu Hridaye (heart)
Om Janah Punatu Nabhyam (naval cord)
Om Tapah Punatu Padeyoh (feet)
Om Satyam Punatu Punah Shirast (head)
Om Kham brahma Punatu Sarvatra (the whole body)

May the Supreme Being, the Great Lord, the Source of Energy and Light, purity and strengthen my brain (powers of understanding), my eyes (powers of vision). my throat and my speech, my powers of heart, my procreative powers, my legs (feet) and the entire body to perform its no mal functions and activity in the service of Humanity!

The devotee is reminded in this hymn, that the body is the Temple of the Lord and its organs and powers are to kept in the highest efficiency. One is to devote his entire energy to the building up of a sound mind in a sound body. The secret of life lies in this and this alone Those who believe prayer to be a passive contemplation must understand that the Vedic prayer is active in its nature and prescribes a life of ceaseless activity both in his individual capacity and as well as in the capacity of his being a member of his community. Prayer, like education, aims at good citizenship.

In these hymns we pray for the strength of our bodily organs and also for their keeping in strict discipline Strength with discipline leads us to glory, but without discipline it drives us to despair and destruction. A man with strong and healthy organs can glorify God by leading a life of discipline and self-control. Injustice and tyranny are born of indiscipline But glory and good name come to those who make the best use of their strength under the laws of strict discipline and selfcontrol.

We pray to God to allow us a store of strength to strengthen these sense-organs and make them our allies. Our life should become miserable if our organs do not act as our allies but act as our enemies. Our hands and feet, our eyes and ears, while playing the role of an enemy bring havoc to us. Erring organs lead us hellward. While they act as our allies they lead us heavenward.

Our Prayer for bodily strength and vigour will be effective only when we see that :—

1. We keep our sense-organs strong and unerring.
2. We keep them always engaged in healthy activities.
3. We keep them pure and clean by withdrawing them from unclean and profane pursuits.

"नीम एक – गुण अनेक"

मच्छरों की मार से सारी दुनिया परेशान है यहां तक कि बड़े-बड़े योद्धाओं को भी यदि मच्छर काट ले तो वे भी असहाय और निर्बल प्राणियों की श्रेणी में अपने आपको खड़ा पाते हैं। मच्छरों से मुकाबला करने के लिए दूसरी तरफ लोगों की जेबे लूटने वाली व्यापारिक कम्पनियों ने रसायनों से बनी अगरबत्तियां, बिजली के कई उपकरण जैसे गुड नाईट आदि तथा त्वचा पर लगाने वाली क्रीम, जैसे ओडोमॉस आदि का निर्माण करके जनता की जेबों से व्यापार करना शुरू कर दिया। इन उपायों से कुछ हद तक मच्छरों का इलाज बेशक होता हो परन्तु इनका मानवीय शरीर पर भी बड़ा भारी कुप्रभाव पड़ता है। मच्छरों से लड़ने के लिए नीम का तेल एक विशुद्ध प्राचीन भारत की औषधि है। नीम के पत्तों को चबाकर खाना या नीम के तेल की रात को सोते समय हाथों पैरों पर मालिश तथा मुंह पर भी पांच दस बार हाथ फेरना प्रमुख एवं कारगर उपाय है, जिससे केवल मच्छर ही नहीं भागेंगे अपितु वायरल जैसे बुखारों की बीमारियां तथा ब्लड शुगर आदि की अधिकता से भी सारी उम्र के लिए छुटकारा मिल जायेगा।

नीम के तेल के घरेलू उपयोग

1. सुन्न शरीर में प्राण फूंकने की नीम में पर्याप्त क्षमता है। तेल की शरीर के सुन्न अंग पर मालिश करने से डेढ़ दो सप्ताह में ही रक्त संचार सुचारू हो जायेगा।
2. आग से जले पर नीम का तेल बड़ा लाभदायक है। घाव हो जाने पर आधा भाग मोम मिलाकर मल्हम बनाकर घाव पर लगाने से घाव जल्दी भरता है।
3. दाद, खाज व खुजली में नीम के तेल का उपयोग लाभदायक है। बवासीर में गुदा पर लगाने से आराम मिलता है।
4. नीम के तेल में शहद मिलाकर रूई की बत्ती कान में फेरने से कान बहना बन्द हो जाता है तथा दुर्गन्ध भी नहीं रहती।
5. नीम का तेल नियमित रूप से सिर में लगाने से गंजापन दूर होता है तथा बाल झड़ने बन्द हो जाते हैं। इस प्रयोग में शीतल जल से सिर धोना चाहिए।
6. गठिया हो जाने पर नीम तेल की पीड़ित स्थान पर मालिश करें।
7. चेचक रोग में नीम का तेल लगाने से दाग नहीं रहते।
8. जुएं व लीक हो जाने पर नीम का तेल लगावें, नष्ट हो जायेंगी।
9. कुष्ठ रोग व सफेद दाग में नीम का तेल रोग ग्रस्त स्थान पर लगावें। त्वचा रोग दूर हो जायेगा।
10. नासूर में 100 ग्राम नीम तेल में 10 ग्राम मोम व 10 ग्राम बीरोजा मिला कर मल्हम बनाकर दोनों समय लगावें।
11. हड्डियों का अल्सर नीम तेल लगाने से ठीक होता है।
12. गिरने से भीतरी चोट व मोच के कारण सूजन आ गई हो तो नीम तेल चुपड़कर गर्म सिकाई करें।
13. दुधारू पशुओं को लगाने से उनके थनों पर चिचड़े आदि कृमियों से रक्षा होती है।
14. बालों का झड़ना व अन्य बालों के रोग शुद्ध भ्रंगराज तेल में 30 प्रतिशत नीम तेल मिलाकर लगाने से सिर में होने वाली अनेक व्याधियों को दूर करता ही है तथा बालों का झड़ना, असमय सफेद होना रोकता है तथा झड़े हुए बाल तो पुनः आते ही हैं, सफेद बाल भी काले हो जाते हैं। नेत्र ज्योति तेज हो जाती है।
15. दांत में खून आने व पायरीया में नीम तेल दांतों पर अंगुली से लगावें बाद में दंत मंजन से मुंह साफ करने से खूनी पायरीया व दांत दर्द में आराम मिलता है।
16. बर्र एवं मधुमक्खी के काटने पर नीम तेल लगावें जलन नहीं रहेंगी।

आर्य समाज की गतिविधियाँ

कर्मयोगी सेठ रामधारी आर्य का जीवन हमारे लिए अनुकरणीय रहेगा

सच्चे कर्मयोगी, ऋषि भक्त, दानवीर, कर्मठ, सहनशील, यज्ञप्रेमी, गौ-प्रेमी, आदर्श उद्योगपति एवं आदर्श पिता, निष्ठावान आर्य समाजी सेठ रामधारी सिंह आर्य का निधन 27 जुलाई, 2015 को हो गया। वो अपने जीवन के लगभग 85 वर्ष पूरे कर चुके थे।

सेठ जी का जन्म रोहतक जिले के गांव टिटौली में एक साधारण परिवार में लाला टीकाराम जी के घर पर हुआ। उस समय हिन्दी पाठशाला न होने के कारण आपने अपनी पढ़ाई गांव में ही एक उर्दू के मदरसे में की। आप प्रारम्भ से ही कठिन परिश्रमी स्वभाव के रहे। आपका मानना था कि यदि जीवन में आगे बढ़ना है तो पूरी मेहनत, लग्न व ईमानदारी के साथ कार्य करना चाहिए। जिसको आपने भी अपने जीवन में अपनाया। प्रारम्भिक दिनों में आप कपड़े सिलने का काम करते थे। उसमें जो भी बचता उसका आधा हिस्सा दान में देते थे और शेष हिस्से से आपने अपने परिवार को आगे बढ़ाने का कार्य किया।

आपका विवाह 1948 में गांव समसपुर जिला भिवानी में श्रीमती भन्ती देवी के साथ हुआ। वो भी आपकी तरह ही कर्मठ एवं मेहनती थीं। वे अपने घर में गाय व यज्ञ को प्राथमिकता देती थी। उन्होंने भी सेठ जी का बखूबी साथ निभाया। सेठ जी व आपके संयुक्त प्रयास से ही आपकी सन्तान योग्य बनी तथा आपने पूरे परिवार को एक संयुक्त परिवार के रूप में रखकर समाज के सामने एक आदर्श दम्पत्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया।

सेठ जी जहां अपने गृहस्थ जीवन का पालन पूरी तन्मयता से कर रहे थे वहीं आर्य समाज के कार्य भी पूरे मनोयोग व आत्मीयता के साथ कर रहे थे। आपने अपने साथियों श्री दयानन्द शास्त्री व राम गोपाल जी के साथ मिलकर पूरे इलाके में आर्य समाज का नाम खूब रोशन किया। आप जहां स्वयं दान देते थे वहीं औरों को भी प्रेरित करते थे।

आप शिक्षा के महत्त्व को समझते थे। इसलिए आपने गांव में आर्य पाठशाला को भी भरपूर सहयोग करवाया। आज तक उसमें प्रतिदिन यज्ञ होता है जो इलाके में एक मिशाल मानी जाती है वो सब अधिकांश आपकी प्रेरणा व सहयोग से चलता है। आपके जीवन में दानशीलता व कर्मठता का अनोखा उदाहरण इससे ज्यादा क्या होगा कि आप जब गांव में आर्य समाज के कोषाध्यक्ष बने तब उसमें केवल तीन हजार रुपये थे और जब आपने अपना पद छोड़ा तो उसमें 3 लाख रुपये थे। आप 32 वर्ष पाठशाला से जुड़े रहे। आपका आर्य समाज के लिए समर्पण सभी के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय है। इतना ही नहीं आपने आर्य समाज व उससे बाहर भी विभिन्न संस्थाओं में दान देकर राष्ट्रहित में हो रहे आवश्यक कार्यों को और गति प्रदान की है। कितनी ही गौशालाओं में आपका सहयोग जाता है। आश्रमों में तथा असहायों के शिक्षण में आपका सहयोग अतुलनीय है। आप स्वभाव से बहुत निर्मल, सहज दिखाई देते थे, परन्तु आपकी मेहनत, कर्मठता, समर्पण एवं कर्त्तव्यबोध आपको एक सामान्य व्यक्ति से कर्मयोगी की श्रेणी में ले जाते हैं।

आपने अपनी सन्तानों को भी कामयाबी की ऊँचाई तक पहुंचाया। वर्तमान में आप अपना जीवन एक वानप्रस्थी की तरह जी रहे थे। आप कई बार आर्य समाज की गतिविधियों के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (टिटौली) में आते रहते थे। एक उदाहरण इतिहास में आता है कि गुरुदत्त विद्यार्थी आर्य समाज के पांच नियम आगे व पांच नियम पीछे लटकाकर आर्य समाज का प्रचार करते थे। परन्तु सेठ जी भी अपने बैग में आर्य समाज के 10 नियम रखते व जो मिलता उन्हें बताते व दिखाते। कितनी ही आर्य सिद्धान्तों की पुस्तकें आप समय-समय पर बांटते रहते थे। आपके जीवन का हर पहलू किसी न किसी रूप में धारण करने योग्य है। आप अपने मृत्यु से एकघण्टा पहले तक भी अपनी कर्मशीलता का उदाहरण देकर चले गए। आपकी मृत्यु इतनी सहज रही मानो कोई कुछ देर के लिए सोया हो। यही एक सच्चे योगी की विशेषता होती है।

आपका जाना सिर्फ परिवार के लिए नहीं बल्कि आर्य समाज सहित अन्य सामाजिक संस्थाओं के लिए अपूर्णीय क्षति है। जिसको निकट भविष्य में पूरी कर पाना आसान नहीं है।

सेठ जी अपने पीछे एक व्यापक परिवार छोड़कर गए हैं जिनमें उनके पुत्र एवं पुत्र वधुएं - आर. के. गुप्ता-कमलेश गुप्ता, बी. एल. जिन्दल-गुणवती जिन्दल, जय किशन जिन्दल-शारदा जिन्दल, लक्ष्मी नारायण जिन्दल-दमयन्ती जिन्दल, हरिओम जिन्दल-अंजु जिन्दल।

पुत्री-दामाद :- कृष्णा गर्ग-श्री श्यामलाल गर्ग, कमलेश जैन-श्री प्रवेश कुमार जैन, निर्मला गर्ग-श्री ईश्वर गर्ग, शकुन्तला गर्ग-श्री सुरेन्द्र गर्ग।

पौत्र-पौत्रवधु :- विनय गुप्ता-कविता गुप्ता, विनोद गुप्ता-शीतल गुप्ता, विरेन्द्र जिन्दल-रुचि जिन्दल, विजय जिन्दल-रिंकी जिन्दल, विपिन जिदल-प्रियंका जिन्दल, यमन जिन्दल।

पौत्री-दामाद :- ममता गोयल-श्री प्रदीप गोयल (रिंकू), प्रीति अग्रवाल-सुनील अग्रवाल, ज्योति गोयल-नवीन गोयल, सोनाली (विभा) बंसल-मनोज बंसल, नीतू सिंघल-राजेश सिंघल, सुमन जिन्दल, नैन्सी गोयल, रजत गोयल, पूजा, राहुल।

परपौत्र-परपौत्री :- मयंक गुप्ता, अक्षय गुप्ता, वंशिका जिन्दल, गर्विता गुप्ता, भव्य जिन्दल, हिमांशु गुप्ता, करिश्मा जिन्दल, सक्षम जिन्दल, छवि जिन्दल।

- ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रधान
सार्व. आर्य युवक परिषद्
हरियाणा

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य के नेतृत्व में
जहां नहीं होता कभी विश्राम • आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

युवा संस्कार अभियान

गांव, गली, चौराहे पर, घर-घर यज्ञ रचायेंगे, धरती को स्वर्ग बनायेंगे

बलमुपास्व

12 से 25 वर्ष तक के 5000 युवाओं को यज्ञोपवीत से दीक्षित करने का संकल्प

10 दिन में 31 कार्यक्रम : दिनांक 14 अगस्त 2015 से 23 अगस्त 2015 तक

1. शुक्रवार, 14 अगस्त 2015, प्रातः 8 बजे
आर्य समाज वृन्दावन गार्डन, साहिबाबाद (गाजियाबाद)
संयोजक: श्री के.के. यादव, प्रमोद चौधरी, रामकुमार मडेरिया, सुरेश आर्य
सम्पर्क: 09312248396, 9873391114, 9810189585
2. शुक्रवार, 14 अगस्त 2015, प्रातः 9 बजे
आर्य समाज, प्रताप नगर (अम्बामुगल), दिल्ली-110007
संयोजक: श्री केवल कृष्ण सेठी, पी.डी. शर्मा, गुलशन कुमार
सम्पर्क: 08010986707, 23690497
3. शुक्रवार, 14 अगस्त 2015, सायं 4 बजे
पी-4 ब्लाक, एल.डी.पी.एल. ऑफिस जगदम्बा मार्केट,सुल्तान पुरी,दिल्ली-86
संयोजक: श्रीमती राधा भारद्वाज, दशरथ भारद्वाज, धर्मपाल आर्य
सम्पर्क: 09868026474, 07640861115, 9871581398
4. शनिवार, 15 अगस्त 2015, प्रातः 8 बजे
आर्य समाज महावीर नगर (तिलक नगर), नई दिल्ली-110018
संयोजक: श्री राजपाल पुलियानी, श्री दिनेश आर्य, श्री मायाराम शास्त्री
सम्पर्क: 09213637558, 09873107410
5. शनिवार, 15 अगस्त 2015, प्रातः 10.30 बजे
आर्य समाज शाहबाद मोहम्मद पुर, सामने इन्द्रागांधी एयरपोर्ट, नई दिल्ली
डॉ. मुकेश सुधीर-9268103480, श्री जगबीरसिंह आर्य-9350099545
6. शनिवार, 15 अगस्त 2015, दोपहर 2 बजे
आर्य समाज सूर्य निकेतन, विकास मार्ग, दिल्ली-110092
संयोजक: श्री यशवीर आर्य-9312223472, विकास गोगिया, विपिन मिश्रा
7. रविवार, 16 अगस्त 2015, प्रातः 8 बजे
स्थान: आर्य समाज सदेश विहार, पीतमपुरा, दिल्ली-34
संयोजक: श्रीमती सुमन अग्रवाल, सीमा कपूर, दुर्गेश आर्य
सम्पर्क: 27355232, 9968850921, 9868664800
8. रविवार, 16 अगस्त 2015, प्रातः 8 बजे
स्थान: आर्य समाज हापुड़, उत्तर प्रदेश
संयोजक: श्री आनन्द प्रकाश आर्य, श्री प्रेमप्रकाश आर्य, श्री विकास अग्रवाल
सम्पर्क: 09837086799, 08057555000, 9837791132
9. रविवार, 16 अगस्त 2015, प्रातः 8.30 बजे
स्थान: आर्य समाज इन्दिरापुरम, गाजियाबाद- फोन 9560215150
विनोद त्यागी-9818376082, विजय आर्य-9310118371, महावीर चौहान
10. रविवार, 16 अगस्त 2015, प्रातः 11 बजे
स्थान: टीनू पब्लिक स्कूल, संगम विहार, दिल्ली-110062
देवदत्त आर्य-9810323883, रामफल शर्मा-9999162077, के.एल. राणा
11. रविवार, 16 अगस्त 2015, सायं 3.30 बजे
स्थान: आर्य समाज सेवा सदन, वल्लभगढ़, फरीदाबाद
संयोजक: जितेन्द्रसिंह आर्य-9210033065, प्रवीन गोयल-09873289899
12. रविवार, 16 अगस्त 2015, सायं 4 बजे
अरिहन्त चौक, प्लाट-16, वैदिक पुस्तकालय, सैक्टर-3, रोहन गार्डन, दिल्ली-59
संयोजक: श्री महावीर शास्त्री-9213326949, ओमवीर सिंह-9868803585
13. सोमवार, 17 अगस्त 2015, प्रातः 8 बजे
डी.डी.ए. पार्क (बालाजी पार्क), सैक्टर 3, द्वारका, नई दिल्ली-78
आचार्य शास्त्री: 9868072383, रोहन बोहरा, शांता अरोड़ा: 9891565149
14. सोमवार, 17 अगस्त 2015, प्रातः 9 बजे
स्थान: आर्य समाज वजीरपुर जे.जे. कॉलोनी, दिल्ली 52
संयोजक: श्री प्रेमपाल शास्त्री, प्रवीण आर्य, योगेश आर्य, रामहेत आर्य
सम्पर्क: 09868977371, 9868992898
15. सोमवार, 17 अगस्त 2015, सायं 5.30 बजे
आर्य समाज मन्दिर, स्वामी श्रद्धानन्द पार्क,
भलस्वा डेयरी, दिल्ली 110042
संयोजक: श्री नन्दलाल शास्त्री, श्री हरपाल प्रधान, श्री मुन्ना चौधरी
सम्पर्क: 09868558698, 8470357074
16. मंगलवार, 18 अगस्त 2015, प्रातः 8.30 बजे
स्थान: विजय हाई स्कूल, सिक्का कॉलोनी, सोनीपत
संयोजक: श्रीमती शालिनी चावला, श्री मनोहरलाल चावला
सम्पर्क: 09813442701, 09813514699
17. मंगलवार, 18 अगस्त 2015, सायं 5 बजे
आर्य समाज टैगोर गार्डन विस्तार, ए.डी. 17-18, दिल्ली-110027
संयोजक: श्री अशोक आर्य, श्री संदीप कुमार आर्य
सम्पर्क: 09213616702
18. बुधवार, 19 अगस्त 2015, प्रातः 8.30 बजे
स्थान: एम.बी.डी.ए.वी. सी.सै. स्कूल, यूसुफ सराय, नई दिल्ली-49
संयोजक: प्रि. श्याम लाल आर्य-9811639930, मोहित आर्य
19. बुधवार, 19 अगस्त 2015, सायं 5 बजे
स्थान: आर्य समाज मोलड़बन्द, पहला 60 फुट रोड,
दक्षिण फर्नीचर के पास मोलड़बन्ध विस्तार, बदरपुर, नई दिल्ली-44
संयोजक: श्री श्यामसिंह यादव, गजेन्द्रसिंह चौहान, सुशील आर्य
सम्पर्क: 09718207743, 9810594417, 9810129235
20. बृहस्पतिवार, 20 अगस्त 2015, प्रातः 8.30 बजे
स्थान: श्रद्धा मन्दिर हाई स्कूल, नहर पार, खेड़ी रोड, फरीदाबाद,
संयोजक: डॉ. गजराज सिंह आर्य, सम्पर्क 09213771515, 8750771515
21. बृहस्पतिवार, 20 अगस्त 2015, सायं 5 बजे
महर्षि दयानन्द वाटिका, सी. ब्लाक, नन्दग्राम, (मेरठ रोड) गाजियाबाद
संयोजक: श्री प्रवीण आर्य-9911404423, श्री सौरभ गुप्ता-9971467978
22. शुक्रवार, 21 अगस्त 2015, प्रातः 8 बजे
बालिबालान बस्ती, गली न. 10, आनन्द पर्वत, नई दिल्ली-110005
[illegible]
23. शुक्रवार, 21 अगस्त 2015, सायं 5.30 बजे
स्थान: आर्य समाज रोहिणी, सैक्टर-7, दिल्ली-110085
राजीव आर्य-9968079062, प्रदीप-8447917986, रोहित-8860209727
24. शनिवार, 22 अगस्त 2015, प्रातः 8 बजे
शाक्ति पीठ पब्लिक स्कूल, एस.जी.एम. नगर, सै. 48, फरीदाबाद
संयोजक: श्रीमती ज्योति आर्या, श्री सत्यभूषण आर्य-09818897097
25. शनिवार, 22 अगस्त 2015, प्रातः 11 बजे
स्थान: आर्य समाज जवाहर नगर (कैम्प), पलवल (हरियाणा)
संयोजक: श्री दिनेश आर्य-9813289555, प्रो. जयप्रकाश आर्य-9813491919
26. शनिवार, 22 अगस्त 2015, सायं 5 बजे
स्थान: डी.डी.ए. पार्क, सैक्टर ए-6, नरेला, दिल्ली-110040
संयोजक: श्री अरुण आर्य, श्री अनुज आर्य, श्री माधव सिंह
सम्पर्क: 09818530545, 9716114610, 8882445109
27. रविवार, 23 अगस्त 2015, प्रातः 10.30 बजे
आर.एस. बिल्डर्स, एफ 5, खजूरी खास, मेन वजीराबाद रोड, दिल्ली 94
संयोजक: श्री राजेन्द्र त्यागी, रामानन्द आर्य, योगेश दहिया, सौरभ योगी
सम्पर्क: 09891278407, 9968784343, 7053888671
28. रविवार, 23 अगस्त 2015, प्रातः 9 बजे
स्थान: आर्य समाज जगदीशपुर, समस्तीपुर, बिहार-09582415761
संयोजक: आर्य चन्द्रमित्र, विद्यासरिधि, सुरेश प्र. आर्य 09006833843
29. रविवार, 23 अगस्त 2015, दोपहर 3 बजे
स्थान: गौरी शंकर मन्दिर, ई.ई.-2818, जहांगीरपुरी, दिल्ली (थाने के पास)
संयोजक: श्री अरविन्द मिश्रा, सम्पर्क: 09868876990
30. रविवार, 23 अगस्त 2015, सायं 5 बजे
आर्य समाज दुर्गापुरी विस्तार, 45/1, दुर्गापुरी विस्तार, दिल्ली-110093
संयोजक: श्री वेदप्रकाश आर्य, नरेन्द्र आर्य, वेदप्रिय, रामदेव, प्रभुनाथ
सम्पर्क: 09810487559, 9650749369, 9990093694

37वां वार्षिक अधिवेशन व राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन

रविवार 6 सितम्बर, प्रातः 9 से सायं 4 तक, स्थानः स्वामी श्रद्धानन्द सामुदायिक केन्द्र, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

सभी स्थानों पर यज्ञ, भजन, प्रवचन व यज्ञोपवीत संस्कार होंगे 'यज्ञोपवीत' लेने के इच्छुक युवक/युवतियां स्थानीय संयोजक को अपना नाम लिखवा दें सभी आर्य जनों, धर्म प्रेमी बन्धुओं व अभिभावकों से अनुरोध है कि अपने निकट के कार्यक्रम में सम्मिलित होकर युवाओं का उत्साहवर्धन करें।

महेन्द्र भाई	रामकुमारसिंह आर्य	संतोष शास्त्री	आचार्य गवेन्द्र शास्त्री	शिशुपाल आर्य
मुख्य संयोजक	प्रान्तीय संचालक	प्रान्तीय महामंत्री	प्रान्तीय प्रभारी	प्रान्तीय उपसंचालक
9013137070	9868064422	9868754140	9810884124	9971550031

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, फोन - 9868661680, 9312406810

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल बी-69, सैक्टर-33 नोएडा में श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद गोष्ठी

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सैक्टर-33 नोएडा एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में श्रावणी के उपलक्ष्य में दिनांक 21 से 23 अगस्त, 2015 तक त्रि-दिवसीय वेद विषयक विद्वत गोष्ठी का भव्य आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान सर्वश्री डॉ. वेदपाल, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, डॉ. राजकिशोर शास्त्री भाग ले रहे हैं। नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार रविवार 23 अगस्त को होगा। इस अवसर पर माननीय योगानन्द शास्त्री एवं स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता होंगे। 22 अगस्त को सायं भजन-संध्या का आयोजन किया जा रहा है। सभी गुरुकुल प्रेमी, वेद प्रेमी, संस्कृत प्रेमी एवं वैदिक संस्कृति के चाहने वाले आर्यों से सविनय अनुरोध है कि उपरोक्त भव्य कार्यक्रम में सपरिवार भाग लेकर सफल बनायें।

- कै. अशोक गुलाटी, मो.:-9871798221

लुधियाना में वैदिक सत्संग का आयोजन

लुधियाना : आर्य समाज किदवई नगर, आर्य पुरोहित सभा लुधियाना और आर्यवीर दल द्वारा संयुक्त रूप से वैदिक सत्संग का आयोजन 26 जुलाई, 2015 को आर्य समाज किदवई नगर में करवाया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में श्री राजेन्द्र शास्त्री द्वारा हवन करवाया गया। जिसमें मुख्य यजमान श्री संजीव कुमार चड्ढा एवं सीमा चड्ढा, श्री रणवीर पाहवा एवं निशा पाहवा, श्री नितिन महाजन एवं गायत्री महान और श्री नरेन्द्र वर्मा एवं सुमन वर्मा थे। यज्ञ के पश्चात् श्री राजेन्द्र शास्त्री द्वारा मधुर भजन प्रस्तुत किये गये उसके पश्चात् ब्रह्मचारियों श्री अरविन्द शास्त्री एवं मोहन लाल शास्त्री द्वारा योगासन एवं कंठ द्वारा सरिया मोड़ने का सफल प्रदर्शन किया गया। इनके इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री संजय निर्माणी का विशेष योगदान रहा। इसके पश्चात् पंडित उपेन्द्र शास्त्री (चण्डीगढ़ वाले) द्वारा मधुर भजन प्रस्तुत किये गये। मंच का संचालन पंडित योगराज शास्त्री द्वारा बखूबी किया गया। कार्यक्रम में अमित गोसाई, गुरदीप, नीलू एवं श्री रमेश बांगड़ विशेष रूप से आमंत्रित महानुभाव थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में जिला प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा, श्री विजय सरीन, श्री श्रवण बत्रा, श्री आत्म प्रकाश, श्री सुरेश कुमार चड्ढा, श्री वेदप्रिय चावला, श्री लखजीत पाहवा, श्री सुरेन्द्र कुमार टंडन, श्री रमाकान्त महाजन, आर्य समाज किदवई नगर के प्रधान श्री गरीबदास जी एवं सभी सदस्यों द्वारा तथा आर्य वीरदल के सुमित टंडन, गौरव पाहवा, अपर्ण पाहवा, मोहित महाजन, अखिल सूद, सिद्धान्त अबरोल, पतंजलि योगपीठ से श्री सुभाष अबरोल एवं मास्टर अनिल का विशेष योगदान रहा है। कार्यक्रम में भिन्न-भिन्न आर्य समाजों के श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, श्रीमती अणु गुप्ता, श्री अनिल कुमार, श्री पदमओल, श्री जगजीव बसी, श्री अजय बत्रा, श्रीमती बिनोद गांधी आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए एक दिन पूर्व 25 जुलाई, 2015 दिन शनिवार को संध्या फेरी का आयोजन किया गया। जो आर्य समाज हबीबगंज से शुरू होकर आर्य समाज किदवई नगर में समाप्त हुई। संध्या फेरी के सफल आयोजन में श्री संजीव कुमार चड्ढा, पंडित योगराज शास्त्री, पंडित कर्मवीर शास्त्री, पंडित राजेन्द्र शास्त्री, पंडित बालकृष्ण शास्त्री एवं भिन्न-भिन्न आर्य समाजों के अधिकारियों का विशेष योगदान रहा। संध्या फेरी का रास्ते में फल-फूलों द्वारा स्वागत किया गया।

सत्संग के अंत में पुरोहित सभा के प्रधान पंडित बाल कृष्ण शास्त्री द्वारा एवं आर्य समाज किदवई नगर के प्रधान श्री गरीब दास द्वारा आये हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया गया। अंत में ऋषि लंगर के पश्चात् सत्संग की समाप्ति हुई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये
(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)
भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

राजा वरुण सब-कुछ जानता है

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निळायं चरति यः प्रतंकम्।
द्वौ सन्निषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरुणस्तृतीयः।।

—अथर्व० ४/१६/२

ऋषिः—**ब्रह्मा**।। देवता—**वरुणः**।। छन्दः—**त्रिष्टुप्**।।

विनय—पाप से वास्तव में डरने वाले मनुष्य संसार में विरले ही होते हैं। प्रायः लोग पाप करने से नहीं डरते, किन्तु पापी समझे जाने से डरते हैं। जहाँ कोई देखने वाला न हो वहाँ अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाना, कोई पाप कर लेना, साधारण बात है। पाप व अपराध कर्म से बचने की कोई कोशिश नहीं करता; कोशिश तो इस बात की होती है कि हम वैसा करते हुए कहीं पकड़े न जाएँ। यही कारण है कि मनुष्य अपने बहुत–से कार्य छिपकर अकेले में करने को प्रवृत्त होता है, परन्तु यदि उसे इस संसार के सच्चे, एकमात्र राजा वरुणदेव की जानकारी हो तो वह ऐसे घोर अज्ञान में न रहे। यदि उसे मालूम हो कि वे जगत् के ईश्वर वरुण भगवान् सर्वव्यापक और सर्वद्रष्टा हैं तो वह पाप के आचरण करने से डरने लगे; वह एकान्त में भी कभी पाप में प्रवृत्त न हो सके। यदि हम समझते हैं कि हम कोई काम गुप्त रूप में कर सकते हैं तो सचमुच हम बड़े धोखे में हैं। उस सर्वद्रष्टा, सर्वव्यापक वरुण से तो कुछ भी छिपाकर करना असम्भव है। जब हम दो आदमी कोई गुप्त मन्त्रणा करने के लिए किसी अँधेरी–से–अँधेरी कोठड़ी में जाकर बैठते हैं और सलाहें करने लगते हैं, तो यद्यपि हम समझ रहे होते हैं कि हम दोनों के सिवाय संसार में और कोई इन बातों को नहीं जानता, तथापि इन सब बातों को वह वरुण देव वहीं तीसरा होकर बैठा हुआ सुन रहा होता है। यदि हम वहाँ से उठकर किसी किले में जा बैठें, या किसी सर्वथा निर्जन वन में पहुँच जाएँ तो वहाँ पर भी वह वरुणदेव तो तीसरा साक्षी होकर पहले से बैठा हुआ होता है। उससे छिपाकर हम कुछ नहीं कर सकते। यदि हम दूसरे किसी आदमी को भी कुछ नहीं बताते, केवल अपने ही मन में कुछ सोचते हैं, तो वह वरुण उसे भी जानता है, सब सुनता है। हमारे चलने या ठहरने को, हमारी छोटी–सी–छोटी चेष्टा को वह जानता है। जब हम दूसरों को धोखा देते हैं, ठग लेते हैं और समझते हैं कि इसका किसी को पता नहीं लगा, तब हम स्वयं कितने भारी धोखे में होते हैं। क्योंकि, उस वरुण को तो सब–कुछ पता होता है और हमें उसका फल भोगना पड़ता है।

शब्दार्थ—**यः तिष्ठति, चरति**=जो मनुष्य खड़ा है, या चलता है, **यः च वञ्चति**=जो दूसरों को ठगता है **यः निलायं चरति**=जो छिपकर कुछ करतूत करता है **यः प्रतंक चरति**=जो दूसरों को भारी कष्ट आदि देकर अत्याचार करता है और **द्वौ सन्निषद्य**=जब दो आदमी मिलकर, एक–साथ बैठकर, **यत् मन्त्रयेते**=जो कुछ गुप्त मन्त्रणाएँ करते है। **तत्**=उसे भी **तृतीयः**=तीसरा होकर **वरुणः राजा**=सर्वश्रेष्ठ सच्चा राजा परमेश्वर **वेद**=जानता है।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

फरमाणा में तीन दिवसीय शिविर में आत्म सुरक्षा के गुर सीखेंगी लड़कियाँ

फरमाणा में स्वतंत्रता दिवस से शुरू होगा कन्या चरित्र निर्माण व योग प्रशिक्षण शिविर

फरमाणा (2.8.15) : सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद व आर्य समाज फरमाणा के संयुक्त तत्वावधान मे स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त से तीन दिवसीय कन्या चरित्र निर्माण व योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन गावँ फरमाणा में किया जा रहा है।

यह जानकारी बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने दी। उन्होने बताया कि आज गावं मे बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय प्रधान बहन पूनम आर्या, आर्य युवक परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष श्री दीक्षेंद्र आर्य के साथ वे तैयारियों की जानकारी लेने के लिये आये थे। उन्होने बताया कि यह शिविर लड़कियों को आत्म निर्भर व स्वयं सुरक्षा के गुर सिखाने के लिए आयोजित किया जायेगा। कन्याओं को योग के प्रति लगनशील बनाने व उनमे नैतिकता व मानवता कि भावना को जागृत करना भी उदेश्य रहेगा।

शिविर में राष्ट्रपति से सम्मानित आयुष विभाग दिल्ली में कार्यरत बेटी बचाओ अभियान की प्रमुख कार्यकर्ता सोनिया आर्या, राष्ट्रीय स्तर पर योग में स्वर्ण पदक विजेता कुमारी राजकुमारी आर्या व सुमन आर्या कन्याओं को योगासन, प्राणायाम के अतिरिक्त लाठी चलाना, जूडो कराटे व बॉक्सिंग का प्रशिक्षण देंगे। बौद्धिक प्रशिक्षण मुख्य रूप से स्वयं बहन पूनम आर्या देंगी। सन्ध्या व हवन भी सिखाया जायेगा।

शिविर में समय–समय पर आर्य समाज के नेता सामाजिक कार्यकर्त्ता भी मार्गदर्शन करने के लिए आएंगे।

शिविर के लिये सभी को प्राथमिक तैयारी के लिए जिम्मेदारी सौंपी गई। इस अवसर पर आर्य समाज फरमाणा के प्रधान मेजर वीर सिंह, नफेसिंह आर्य, डॉ सतबीर सिंह, रणधीर सिंह बुरा, डॉ राजेश, मनोज पहलवान, नंदराम, रामनिवास, राजबीर, मा. राजेन्द्र, मोनिका आर्या, नेहा आर्या व अंजलि आर्या आदि उपस्थित थे। शिविर का समापन 17 अगस्त को तीज के अवसर पर व्यायाम प्रदर्शन के साथ किया जायेगा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।